Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.3
ISSN No. 2456-1665

प्रयोजनमूलक हिन्दी के विकास में अनुवाद

प्रा. डॉ. मारोती उत्तमराव खेडेकर
हिन्दी विभाग
स्व. नितीन महाविद्यालय पाथरी

प्रयोजनमूलक हिन्दी के संदर्भ में 'प्रयोजन' से तात्पर्य है उद्देश्य अथवा प्रयुक्त 'प्रयोजन' का संबंध भाषा में उसकी प्रयोजनीयता से जुडा हुआ है। प्रयोजनमूलक हिन्दी अग्रेजी शब्द 'फक्शनल हिन्दी' का पर्याय है। श्री मोटुरी सत्यनारायण जी प्रयोजनमूलक हिन्दी के जनक माने जाते है। प्रयोजनमूलक विशेषण का पक्ष लेकर इस प्रयोगात्मक भाषा का स्वरूप स्पष्ट करते हुए बताते है – "जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जानेवाली हिन्दी ही प्रयोजनमूलक हिन्दी" है। आपका मत है कि व्यावहारिक हिन्दी में हिन्दी में हिन्दी के व्यावहारिक व्याकरण को पर्याप्त स्थान मिला है। लेकिन 'फक्शनल हिन्दी' में केवल व्यावहारिक व्याकरण ही नही। उदारवादी एवं बहुराष्ट्रीय परिवार के कामकाज में आनेवाली भारतीय भाषा का स्वरूप है। व्यावहारिक हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र सीमित है।

दैनिक जीवन से जुडा हुआ है इसमे पारिभाषिक शब्दावली, विशिष्ट पद विव्यास और विज्ञान तथा प्रोद्योगिकी को अभिव्यक्त करने की क्षमता स्पष्टता नही है। प्रयोजनमूलक हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली, भाषिक संरचना एवं अनुप्रयुक्तता के साथ आधुनिक ज्ञान विज्ञान के सभी क्षेत्रों को रूपाचित करने की दक्षता भी दृष्टिगत होते है। इस दृष्टि से प्रयोजनमूलक हिन्दी की व्याख्या होगी। प्रयोजनमूलक हिन्दी से तात्पर्य है हिन्दी का वह प्रयुक्तिपरक विशिष्ट रूप जो विषयगत भूमिकागत तथा संदर्भगत प्रयोजन के लिए विशिष्ट भाषिक संरचना व्दारा प्रयुक्त किया जाता है। जो सरकारी प्रशासन तथा विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी के अनेक विधि क्षेत्रों को अभिव्यक्त प्रदान करने में सक्षम सिध्द होता है। भारतीय संविधान के अनुच्छदे ३४३ के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है। हिन्दी को राजभाषा का अधिकार मिलने का प्रमुख कारण यह है कि जनसंपर्क की भाषा के रूप में इसका सबसे अधिक प्रसार है। हिन्दी की इस मान्यता के कारण केंद्रिय सरकार के कार्यालयों में प्रशासनिक रूप में हिन्दी का प्रयोग हो रहा है। इसके साथ साथ प्रशासन, कार्यालय जनसंचार माध्यम विधी जैसे प्रतिष्ठित क्षेत्रों में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में भूमिका अदा कर रही है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की संरचना का महत्वपूर्ण तत्व है-अनुवाद। हिन्दी के राजभाषा के पद पर आसीन होने के पश्चात उसके प्रयोजनमूलक रूप में अनुवाद एक जरूरी एवं अनिवार्य उपकरण बनकर उभरा।

१) बैंक क्षेत्र में अनुवाद :-

समाज में जैसे जैसे विविधता, औद्योगीकरण एवं विशिष्टीकरण की माँग बढती ह गई, बैंकिंग का क्षेत्र भी उसी के अनुरूप व्यापक होता गया। बैंकिंग आज किसी भी सरकार का एक बहुत बडा दायित्वपूर्ण विभाग बन गया है।

बैंकिंग के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग मुख्य रूप से दो स्तरों पर होता है। - एक राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के अनुपालन के स्तर पर और दूसरा जनभाषा के स्तर पर राजभाषा पक्ष के अनुपालन के सभी बैंको में राजभाषा विभाग खोले गए है और नियुक्त हिन्दी अधिकारी, अनुवादक आदि। बैंकिंग साहित्य के अग्रेंजी से हिन्दी में अनुवाद का कार्य करते है। बैंकिंग अनुवाद के लिए यह अत्यंत आवश्क है। बैंकिंग परिचालन की मूल अवधारणा से परिचित हो। बैंकिंग क्षेत्र की शब्दावली एक निश्चित दायरे की होती है।

Account - खाता

Deposit - जमा

Withdrawal - वापसी

Saving Account - बचत खाता

बैंकिंग साहित्य के अनुवाद में हिन्दी की वाक्य रचना पर अग्रेजी वाक्य रचना का प्रभाव व्यापक रूप से पाया जाता है।

बैकों में जो अनुवाद कार्य किया जाता है। वह साहित्यी अनुवाद से पूरी तरह भिन्न होता है। बैंको में अनुवाद कार्य कार्यालय अनुवाद की श्रेणी में आता है। बैंको में अनुवाद विषयानुकूल होता है। मूल अभिव्यक्ति का अनुवाद होता है। बैंको में मुख्यतः दस्ताऐजो फार्मो, परिपत्रों, विज्ञापनों, करारों, अनुबंधो एवं ग्राहको से संबन्धित सूचनाओं का अनुवाद कार्य किया जाता है।

२) प्रशासनिक अनुवाद :-

प्रशासनिक साहित्य में सरकार एवं प्रशासन के कार्यवृत्तों का विवरण और विवेचन होता है। प्रशासनिक भाषा के अनुवाद में सरकार के सारे विभागों के लिए होनेवाले सरकारी सेवा नियम, सरकारी वित्त नियम आदि के संकलन को शुध्द प्रशासनिक, वैधानिक आधार पर करना पडता है। जो कुछ कहा जाता है उसका स्पष्ट और सीधा अर्थ स्पष्ट करना अनिवार्य है। प्रशासन के नेमी पत्र व्यवहार के कुछ नियमित साँचे अग्रेंजी में

बने हुए है। कार्यालय आदेश, ज्ञापन, परिपत्र, आधीसूचना, करारनामा, आदि महत्वपूर्ण है। इनमें संकलित वाक्यांश, निमत अभिव्यक्तियाँ, नियत संरचनाएँ होती है। सामान्य व्यावहारिक प्रक्रिया के नियमों का पालन नही करते। इनके प्रामाणिक अनुवाद में दक्षता पाना प्रशासनिक हिन्दी में पत्र व्यवहार के लिए आवश्यक है। अग्रेंजी संकेतित शब्दों के लिए हिन्दी अनुवाद निम्नलिखित है।

Affidavit - शपथ पत्र

Appropriation - विनियोजन

Linked file - सलग्न फाईल

प्रशासन में सांकेतिक शब्द और सामान्य शब्द दोनों प्रयुक्त होते है।

उदा - Balance - तराजू, संतुलन, शेष, बकाया

Bill - बीजक, विधेयक, विज्ञापन, विवरण

Soction - धारा, अनुभाग, खंड, विभाग

प्रशासनिक क्षेत्र में प्रत्येक पारिभाषिक शब्द की अलग सैध्दांतिक संकल्पना है। हर शब्द विशेष प्रयोजन के लिए होता है।

३) प्रिंट मीडिया में अनुवाद -

प्रिंट मीडिया जहा एक निश्चित समय अंतराल से पाठक तक पहुँचती है वही उसमें हर समय और हर कही निरंतर पहुँचते रहने की क्षमता है। इस विशेषता के कारण की प्रिंट मीडिया की प्रासंगिकता बनी हुई है। समाचार माध्यमों का अनुवाद साहित्यिक अनुवाद से भिन्न होता है। समाचार माध्यमों में मूल पाठ का सारानुवाद या भावानुवाद ही किया जाता है। अनुवाद की शैली रोचकता से पूर्ण होनी चाहिए। पाठक समाचार पढने या सुनने के लिए बाहय हो सके। समाचार माध्यमों का अनुवाद की भाषा सहज, सरल और सर्वग्राही होना चाहिए। हिन्दी का स्वभाव और प्रकृति अँग्रेजी से पूरी तरह भिन्न है। इसलिए अनुवादक का कर्तव्य है कि वह हिन्दी के मूल स्वभाव को समझकर ही अनुवाद करें।

❖इलेक्ट्रॉनिक मीडिया :-

इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम में मुख्य तौर पर टेलिविजन और रेडिओ को रखा जाता है। टेलिविजन आज सबसे सशक्त माध्यम है और इसमें भाषा का अनुवाद और रूपान्तरण किया जाता है। टेलीविजन ने भाषा के स्तर पर अनेक प्रयोग किए है। सभ्य और विकसित समाज की भाषा अलग होती है। अनुवाद की भाषा की सबसे बडी विशेषता यह यह होती है कि वह विभिन्न कार्यक्रमों को प्रयोजनमूलक सम्बन्धो से जोडती है। टेलीविजन में कई कार्यक्रम डब भी किए जाते है। टेलीविजन की भाषा का अनुवाद में

अत्यंत सतर्कता और सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है। रेडियो के विभिन्न प्रोग्राम मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में या तो मानक रूप में या समाचार की प्रवृति के अनुसार आँचलिक भाषा के रूप में प्रयोग में आते है। रेडियो की भाषा प्रसारण की भाषा है, और वह सीधा अनुवाद करती है। रेडियो धरा में अकेलापन दूर करता है और वह तेजी से अपने प्रसारण को उपग्रह माध्यम से या टेलिफोन लाईनों से और अन डिजिटल तकनीकों से प्रसारित कर देता है। इसलिए इसकी गतिशील होती है और एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है।

४) वाणिज्यानुवाद :-

प्रत्येक व्यक्ति और समाज के लिए ही नही, प्रत्येक राष्ट्र के लिए वाणिज्य क्षेत्र का अपना विशेष महत्व है। प्रत्येक देश के विकास में वाणिज्य की भूमिका इसलिए प्रत्येक समाचार पत्र में बाजार की हलचल का बचौरा छपता है। कुछ वाणिज्य शब्दों के अर्थ —

नरम पडना — दामों की कमी आना, घटना
भडकना - बहुत बढ जाना
मुंह के बल गिरना - भावों के अचानक कमी होना।

वाणिज्यीक क्षेत्र का कार्य —

स्वतंन्त्रता के बाद वाणिज्यीक क्षेत्र में अनेक पारिभाषिक शब्द का मानकीकरण हुआ है। इनमें कुछ शब्द अंग्रेजी और विदेशी भाषाओं से भी आए है। जैसे - रॉयल्टी, बोनस, शेयर, कमीशन और बजट कुछ द्वविभाषिक शब्दों का भी प्रचलन है।

जैसे - Undertaking - उपक्रम
Corporation - निगम
Investment - निवेश
Project - परियोजना

वाणिज्य प्रक्रिया जनता से अलग नही होती इसलिए अनुवाद का कार्य बढता जा रहा है। लेकिन इस क्षेत्र में भी अंग्रेजी का वर्चस्व बना हुआ है। विशेष रूप से बडे व्यापारिक क्षेत्रों में अग्रेजी का प्रयोग किया जाता है।

संदर्भ :-

१) प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रासंगिकता एवं परिदृश्य - डॉ. एस नोगलक्ष्मी पृ.६१
२) प्रयोजनमूलक हिन्दी और जनसंचार - डॉ. राजेन्द्र मिश्र पृ. ४१
३) प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप - राजेन्द्र मिश्र, राजेश शर्मा पृ.२५
४) प्रयोजनमूलक हिन्दी दशा और दिशा - डॉ. शाहिद कमर पृ.३१